International Journal of Social Science and Humanities
www.humanitiesjournals.com
Online ISSN: 2664-8628 Print ISSN: 2664-861X
Received: 07-01-2025, Accepted: 06-02-2025, Published: 21-02-2025
Volume 7, Issue 1, 2025, Page No. 57-58

लोक कला, लोक संगीत एवं लोक संस्कृति का वैश्विक प्रभाव

दीप्ति शर्मा[1], डॉ. रास बिहारी दास[2]
[1] शोधार्थी, मंच कला विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान, भारत
[2] निर्देशक, असिस्टेंट प्रोफेसर, मंच कला विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान, भारत

सारांश
कला हर काल व स्थिति में समृद्ध होती है। लोक कलाएँ, बहुकोष साहित्य को धारण किए हुए है। लोक कलाएँ प्रत्यक्ष रूप से किसी देश व प्रांत के रीति–रिवाज़ों, त्यौहारों, परंपराओं को व्यक्त करती है। लोक कलाएँ, लोक संस्कृति को लोक संगीत के माध्यम से एक अभिव्यक्ति प्रदान करती है। समाज की पीढ़ी–दर–पीढ़ी चली आ रही मान्यताएँ, क्रियाकलाप जो हमारी लोक संस्कृति का अंग है वह विभिन्न लोक कलाओं व लोक संगीत के माध्यम से अभिव्यक्ति लेता है। इसी रूप में यह संरक्षण भी प्राप्त करता है व साथ–साथ समृद्ध भी होता जाता है। वैश्विक रूप में लोक संस्कृति, कलाएँ एवं संगीत प्रांतीय पहचान को व्यक्त करते है। यह न केवल एक पहचान बताते है अपितु एक राष्ट्र के दूसरे राष्ट्र के साथ संबंध को भी गहरा करते हैं।
हमारे भारत के लोकगीत, जैसे– कजरी, पारंपरिक लोक नृत्य जैसे– गरबा, गिद्दा, डांडिया, बिहू इत्यादि पूरे देश व विदेश में भी लोकप्रिय है। यह हमारे भारत की परंपराओं व संस्कृति को वैश्विक रूप में जीवंत रखता है।
लोक के साथ अन्य शैलियों को मिलाकर जब फ्यूज़न रूप दिया जाता है यह भारतीय व पाश्चात्य की जड़ों को एकता के साथ बांधता है।
ऑनलाइन कला शिक्षा के माध्यम से विदेशी छात्र भी दुनिया भर से एक दूसरे देशों की संस्कृति व लोक कलाओं, गीतों एवं नृत्यों का प्रशिक्षण ले सकते हैं। यह संस्कृति के प्रचार एवं प्रसार में भी सहायक है।
विभिन्न स्थानीय व वैश्विक कला महोत्सव हमारे भारत की समृद्ध संस्कृति 'विविधता में एकता' से भरी लोक कलाओं व गीतों को प्रत्यक्ष रूप देने में सहायक सिद्ध होते है।
लोक कलाएँ, लोक संगीत हमारी प्राचीन सभ्यता व संस्कृति का आईना है। हमारे वेद, उपनिषद्, ऋचाएँ विश्व को हमारी धरोहर की नींव दर्शाती है।
वैश्विक पटल पर किसी राष्ट्र व प्रांत की लोक संस्कृति ही उस राष्ट्र/प्रांत की पहचान बताती है एवं उसका अस्तित्व होती है। लोक सदा ही धरातल से जुड़ा होता है। लोक सदा से नींव होता है, संस्कृति व सभ्यता की।

मूल शब्द: धरोहर संरक्षण, विकास एवं रोजगार, विकास योजना, वैश्विक पहचान, सामाजिक एकता, NEP 2020

प्रस्तावना
लोक कला, संगीत एवं संस्कृति वैश्विक तौर पर एक राष्ट्र व प्रांत को पहचान दिलाती है। उस स्थान की आत्मा रूपी होती है। स्थानीय कलाकारों को आजीविका का नया अवसर प्रदान करती है। लोक कला, संगीत के माध्यम से वैश्विक तौर पर कला एवं संस्कृति का राष्ट्रों के मध्य आदान–प्रदान होता है। यह स्थानीय कलाकारों के हृदय की अभिव्यक्ति रूपी कलाएँ होती है। जो विभिन्न समुदायों के कलात्मक प्रदर्शन के रूप में हमारे सम्मुख मखरित होते है। इनके माध्यम से सांस्कृतिक एकता का संवर्धन होता है।

लोक कला एवं संगीत
स्थानीय कलाओं का व्यवस्थित रूप लोक कला होती है। जो प्रांत का रहन–सहन, परंपरा, बोली, पहनवा अपने में संजोएँ होती है। लोक कलाओं के माध्यम से पूरे प्रांत की पहचान आप कर सकते है। वही दूसरी ओर लोक संगीत इन्हीं लोक कलाओं की रंगारंग अभिव्यक्ति होता है। जो आम आदमी की आवश्यकताओं, भावनाओं, जीवनशैली को कलात्मक रूपी अभिव्यक्ति देता है, यह लोक संगीत है। इसका इतिहास अनूठा व अद्भुत है। यह सुन्दरता व प्रत्येक प्रांत की भाषा की विविधता लिए हुए समृद्ध होता है। लोक संगीत, अद्वितीय रूप से समृद्धि ओर संस्कृति को बढ़ावा देता है।

अंतर्राष्ट्रीय आयाम

भारतीय लोक कलाएँ, लोक नृत्य, संगीत, शिल्प इत्यादि आज वर्तमान समय में प्रत्येक राष्ट्र के लिए महत्वपूर्ण है। नई शिक्षा नीति से यह तथ्य स्पष्ट सिद्ध हो जाता है। यह कलाएँ वैश्विक रूप में सराही जा रही है। इनके माध्यम से सांस्कृतिक विविधता की छटा एकता, अखण्डता, राष्ट्र की समृद्धि इतिहास की गौरवशाली गाथाएँ, भारत की एकता पूरे विश्व से गुजाएँमान होती है। कलाकारों को अंतर्राष्ट्रीय मंच प्रदर्शन, नए रोजगार रूप में मिलता है।

आदान–प्रदान: संस्कृति के माध्यम से दो देशों के मध्य जो कलाओं का आदान–प्रदान होता है, उससे एक राष्ट्र के दूसरे राष्ट्र से मित्रवत संबंध मजबूत होते है। साथ ही कलाकार भी भिन्न–भिन्न राष्ट्रों की संस्कृति का जीवंत रूप प्रत्यक्ष देख पाते हैं। अपनी कला को आज डिजिटल प्लेटफार्म के माध्यम से कलाकार विभिन्न देशों में व्यक्त कर पाता है। इसके फलस्वरूप कलाकार की भी सांस्कृतिक समझ बेहतर होती है व साथ ही विश्व पटल पर भी वह अपनी पहचान बनाता है। कला की पहचान बनाता है।

आर्थिक समृद्धि

वैश्विक पर्यटन व विभिन्न कला संस्थानों के कार्य स्वरूप जहाँ हमारी सांस्कृतिक पहचान विश्व में उजागर होती है वही राष्ट्र भी आर्थिक रूप से समृद्धि प्राप्त करता है। आय व रोजगार के नए स्त्रोत उत्पन्न होते है। ICCR दिल्ली, SPIC MACAY, संगीत नाटक अकादमी, दूरदर्शन हमारी विभिन्न गौरवशाली संस्थाएँ है, जो इस दिशा में निरंतर कार्यरत है। इनके द्वारा सुयोग्य छात्रों व कलाकारों को छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है। व देश–विदेश में भी कला प्रशिक्षण के लिए भेजा जाता है। इससे कला एवं कलाकार दोनों समृद्ध होते है, साथ में राष्ट्र को भी समृद्ध करते है।

सांस्कृतिक धरोहर संरक्षण

विभिन्न कला महोत्सव अंतर्राष्ट्रीय रूप में हमारी संस्कृति धरोहर, विरासत को विश्व पटल पर अंकित करते है और इन्हीं के प्रत्यनों से, इन्ही के माध्यम से हमारी विलुप्त होती कलाओं का हम संरक्षण कर पाते हैं। उदाहरण के तौर पर बीनकार कला, कठपुतली कला इत्यादि का संरक्षण इन्हीं कला महोत्सवों के माध्यम से सरकार कर रही है।

इन कार्यक्रमों में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर जहाँ इन कलाकारों को जीवन–यापन के लिए व्यय मिलता है। वही हमारी लुप्तप्राय होती जा रही कला भी नई पीढ़ी को प्रत्यक्ष रूप में देखने को मिलती है। हमारी सुंदर व समृद्ध संस्कृति जिसके नए–नए आयाम है वह भी विश्व तक एक पहचान प्राप्त करते है और फिर से पुनर्जीवित होते हैं। यह अपनी सरल व सहज प्रवृत्ति के कारण ही विश्व प्रसिद्ध होते है।

आधुनिक विलय: हमारी लोक कलाओं विशेषकर संगीत में आज वर्तमान में बॉलीवुड संगीत शैली जुड़ कर नया रूप ले रही है। एक ओर तो यह वास्तविक रूप नहीं परन्तु दूसरी ओर इससे कला का नया रूप भी स्थापित होता है। यह भी अत्यन्त प्रसिद्धि प्राप्त कर रहा है। कला अपने वास्तविक रूप में सदा पावन व पवित्र रही है। कला का सहज एवं वास्तविक रूप हमारी विरासत, धरोहर व संस्कृति की समृद्धि है। यह कलाएँ हमारे जीवन का वह महत्वपूर्ण पहलू है जो हमें हमारे पूर्वजों से जिस रूप में प्राप्त हुई, हमें उसी रूप में वर्तमान को देना है व उसी रूप में भविष्य के लिए संजोएँ रखना है।

निष्कर्ष

राष्ट्र की समकालीन गतिविधियाँ व संस्कृति हमें राष्ट्र की कलाओं के माध्यम से विश्व पटल पर प्रदर्शित होती है। कला व कलाकारों के प्रति हमारे मन में उदारता होनी चाहिए क्योंकि इन्हीं के माध्यम से परम्परा व संस्कृति संरक्षित है, संवर्धित होती है और यह सब इन्हीं में निहित है।

संदर्भ सूची

1. नो इंडिया (n. d.). साहित्य, कला और हस्तशिल्पः लोक और जनजातीय कला. https://knowindia.gov.in/hindi/culture-and-heritage/folk-ats tribal-art.php
2. शर्मा, एस. (2021). कला संस्कृति–संस्कार, सरकार एवं दरकार दिव्य हिमाचल https://www.divyahimachal.com/2021/02/art-culture government-and-needs/
3. बरेठ, जी. लाल (2016), संगीत उन्नयन में हड़ौती ढूंढाण क्षेत्र के शिक्षण संस्थानों की भूमिका. कोटा : विद्या वारिधि उपाधि शोध प्रबंध, कोटा विश्वविद्यालय
4. शर्मा, एस. (2021). कला संस्कृति एवं दरकार, दिव्य हिमाचल. https://www.divyahimachal.com/2021/02/art-culture-government-and-needs/
5. (2021). कला शिक्षा एवं लोक संस्कृति ख्भाग–1,. छत्तीसगढ़ : राज्य शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्राक्षिण परिषद, रायपुर
6. रत्नाकर, एल. (एम डी.). कला और समाजः कल्ला और समाज में शिक्षिक भविष्य की समस्या. कवि रत्नाकर वर्ल्ड प्रेस डॉट कॉम.
7. कुमार, राजीव. (2008). लोक संगीतः सांस्कृतिक परंपरा और भूमिका. लोक संगीत और साहित्य, 32(2), 45–58,
8. शर्मा, नीता. (2015). लोक संगीत का सांस्कृतिक महत्व भारतीय सांस्कृतिक अनुसंधान. 18(4), 112–127.
9. पाठक, सुरेन्द्र (2012). लोक संगीत की विशेषता और भारतीय सांस्कृतिक विरासत में योगदान. लोक संगीत और साहित्य, 36(1), 78–92
10. मिश्रा, आरती, (2017). लोक संगीत और सांस्कृतिक भूगोल: भारतीय परंपरा में एक अध्ययन. सांस्कृतिक भूगोल, 25(3), 210–225.
11. गुमा, सुनील, (2009). लोक संगीत के रूप और संरचनाः एक विश्लेषण. लोक संगीत और कला, 21(4), 56–68.
12. त्रिपाठी, मनोज, (2014). भारतीय लोक संगीत में राजनीति और सामाजिक सांस्कृतिकता. राजनीतिक सांस्कृतिक अनुसंधान, 17(1), 89–104
13. यादव, आरती, (2016). ष्लोक संगीत और भाषाः एक संदर्भ में. भाषा और साहित्य समीक्षा, 29(3), 134–148.
14. सिंह, प्रदीप. (2011). लोक संगीत का सांस्कृतिक और सामाजिक परिप्रेक्ष्य भारतीय सांस्कृतिक अनुसंधान, 14(2), 45–60
15. राजपूत, राजेश. (2018), लोक संगीत और आत्मनिर्भरताः एक सांस्कृतिक विश्लेषण. सांस्कृतिक स्थानीयता, 30(1), 78–91
16. महेश्वरी, अनीता. (2013). लोक संगीत का समाजशाखीय अध्ययनः भारतीय समाज के साथ एक मुकावला. समाजशाख अनुसंधान, 26(3), 201–215.
17. गोस्वामी, सुनील. (2006). लोक संगीतः एक सांस्कृतिक अन्वेषण. दिल्ली : अध्ययन प्रकाशन
18. गठीक, अनुराग. (2019). भारतीय लोक संगीतः संगीत और सांस्कृतिकता का अध्ययन. जयपुर : राजस्थान साहित्य अकादमी
19. शर्मा, रमेश. (2014). लोक संगीत की साहित्यिक रूपरेखा. मुम्बई : ग्रंथालय प्रकाशन
20. कुलकर्णी, अभिजित्त. (2017). भारतीय सांस्कृतिक साहित्य में लोक संगीत. नई दिल्ली : सागर प्रकाशन
21. दिवेदी, शालिनी. (2011). लोक संगीत और साहित्यः एक अध्ययन. लखनऊ : वाणी प्रकाशन
22. शुक्ला, सुमन. (2009). लोक संगीत और भारतीय साहित्यः एक सांस्कृतिक अध्ययन. कोलकाता : सुनील पब्लिकेशन्स